# बच्चों पर शोध-कार्य करते समय बड़े न बनें: श्री ऋषभ मिश्र जी

दिनांक 18 सितंबर 2015 को संवाद मंच के संयोजन में सायं 4 बजे मुक्तिबोध भवन के भूतल पर स्थित मनोविज्ञान विभाग के व्याख्यान कक्ष में बच्चों पर मनोवैज्ञानिक शोध विषय पर शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर एवं बी. एड. पाठ्यक्रम के संयोजक श्री ऋषभ कुमार मिश्रजी के द्वारा *बच्चों से संबन्धित मनोवैज्ञानिक शोध-कार्य कैसे करें?* विषय पर विशिष्ट संवादात्मक व्याख्यान दिया गया।

ज्ञातव्य हो कि श्री ऋषभजी बच्चों पर उत्कृष्ट शोध-कार्य कर चुके हैं और उनके द्वारा लिखे गए शोध-पत्र उच्च-कोटि के जरनल्स में हाल ही में प्रकाशित हो चुके हैं।

बच्चों पर मनोवैज्ञानिक शोध-कार्य करना अति दुष्कर होता है। शोध-कार्य हेतु बाल प्रतिदर्श तक कैसे पहुँच बनाएँ? उनके बीच प्रदत्त कैसे एकत्रित करें? बाल-शोध में कौन से नैतिक मुद्दे हो सकते हैं? आदि अनेक प्रश्नों पर ऋषभजी ने तन्मयतापूर्वक विस्तार से बताया।

उन्होने बताया कि बच्चों पर शोध-कार्य करने के लिए पैरेंट्स और स्कूल से अनुमति अवश्य लेनी चाहिए। जब पारिवारिक परिवेश में बच्चों पर शोध-कार्य करना हो तो कोई की-इनफारमेंट अवश्य ढूँढना चाहिए जिसके माध्यम से उस परिवार के वातावरण से परिचित हुआ जा सके और उनको शोध-कार्य में भागीदारी हेतु सहमत किया जा सके।

बच्चों के व्यवहारों से संबन्धित मापक की भाषा और प्रदत्त एकत्रित करने की शैली बच्चों के लिए रुचिकर बनाई जानी चाहिए। मापक की भाषा सरल, देशज और दैनिक अनुभवों से युक्त होनी चाहिए। विशेषकर छोटी आयु के बच्चों के लिए प्रेक्षण और कुछ योजनाबद्ध गतिविधियां शोध की दृष्टि से अधिक उपयोगी होती हैं। किसी भी बाल शोध-कार्य में शोध –निष्कर्षों की वैधता की जांच चुनौती पूर्ण कार्य होता है। इसके ट्रायंगुलेशन की विधि उपयुक्त होती है।

कई बार जब बच्चों के बीच प्रदत्त संग्रहण के दौरान बच्चे अपनी तीव्र चंचलता प्रदर्शित करते हैं; वे एक साथ बोलना शुरू कर देते हैं या फिर इतर प्रसंगों पर बात करने लगते हैं या कई बार भावनात्मक अनुक्रिया करते हैं; ऐसे में शोधार्थी को धैर्य बनाए रखना पड़ता है। बच्चों पर शोध-कार्य के दौरान अधिक से अधिक प्राकृतिक स्थिति बनाए रखना भी चुनौतीपूर्ण होता है। डिसेप्शन की सीमा को भी उचित रूप से ध्यान में रखना पड़ता है। वास्तव में, बच्चों के बीच शोध कार्य करने के लिए कई बार स्वयं को बच्चे की ही भूमिका का अभिनय करना पड़ता है। किन्तु कई बार कुछ और विवशताएं भी आती हैं जब बच्चे अपनी आपसी लड़ाइयाँ शोधार्थी के पास लेकर आते हैं।

इस व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों ने अनेक जिज्ञासाएँ व्यक्त कीं और उनका समाधान श्री ऋषभजी ने किया। इस संवादात्मक व्याख्यान को सुनने के लिए मनोविज्ञान विभाग के अध्यापक और विद्यार्थी एकत्रित हुए। इस कार्यक्रम का आयोजन डा. अमित कुमार त्रिपाठी जी के सहयोग से डा. अरुण प्रताप सिंह के द्वारा किया गया। इसकी रिपोर्ट डा. अरुण प्रताप सिंह के द्वारा तैयार की गयी और आभार व्यक्त किया गया।